ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

चित्तौड़गढ़ के मूर्ति शिल्प

GEETAM PRADHAN

Assistant Professor, Ranthambhore PG College, Sawai Madhopur, Rajasthan, India

सार

चित्तौड़गढ़ (Chittorgarh) भारत के राजस्थान राज्य के चित्तौड़गढ़ ज़िले में स्थित एक नगर है। यह जिले का मुख्यालय है और बेड़च नदी के किनारे बसा हुआ है। यह मेवाड़ की प्राचीन राजधानी थी। भारत के वीर पुत्र महाराणा प्रताप यहां के राजा थे। इसे महाराणा प्रताप का गढ तथा जौहर का गढ़ भी कहा जाता है। यहाँ 3 जौहर हुए है। गोरा बादल की गुम्बजों से कुछ ही आगे सड़क के पश्चिम की ओर एक विशाल हवेली के खण्डहर नजर आते हैं। इसको राव रणमल की हवेली कहते हैं। राव रणमल की बहन हंसाबाई से महाराणा लाखा का विवाह हुआ। महाराणा मोकल हँसाबाई से लाखा के पुत्र थे। पद्मिनी के महलों के उत्तर में बांई ओर कालिका माता का सुन्दर, ऊँची कुर्सीवाला विशाल महल है। इस मंदिर का निर्माण संभवतः ९ वीं शताब्दी में मेवाड़ के गुहिलवंशीय रोड़ राजाओं ने करवाया था। मूल रूप से यह मंदिर एक सूर्य मंदिर था। निजमंदिर के द्वार तथा गर्भगृह के बाहरी पार्श्व के ताखों में स्थापित सूर्य की मूर्तियाँ इसका प्रमाण है। बाद में मुसलमानों के समय आक्रमण के दौरान यह मूर्ति तोड़ दी गई और बरसों तक यह मंदिर सूना रहा। उसके बाद इसमें कालिका की मूर्ति स्थापित की गई। मंदिर के स्तम्भों, छतों तथा अन्तःद्वार पर खुदाई का काम दर्शनीय है। महाराणा सज्जनसिंह ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। चूंकि इस मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा वैशाख शुक्ल अष्टमी को हुई थी, अतः प्रति वर्ष यहाँ एक विशाल मेला लगता है। कालिका माता के मंदिर के उत्तर-पूर्व में एक विशाल कुण्ड बना है, जिसे सूरजकुण्ड कहा जाता है। इस कुण्ड के बारे में मान्यता यह है कि महाराणा को सूर्य भगवान का आशीर्वाद प्राप्त था तथा कुण्ड से प्रतिदिन प्रातः सफेद घोड़े पर सवार एक सशस्त्र योद्धा निकलता था, जो महाराणा को युद्ध में सहायता देता था। गौमुख कुण्ड तथा कालिका माता के मंदिर के मध्य जैमल पत्ता के महल हैं, जो अभी भगनावशेष के रूप में अवस्थित हैं। राठौड़ जैमल (जयमल) और सिसोदिया पत्ता चित्तौड़ की अंतिम शाका में अकबर की सेना के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये थे। महल के पूर्व में एक बड़ा तालाब है, जिसे जैमल-पत्ता का तालाब कहा जाता है। जलाशय के तट पर बौद्धों के ६ स्तूप हैं। इन स्तूपों से यह अनुमान लगाया जाता है कि प्राचीन काल में अवश्य ही यहाँ बौद्धों का कोई मंदिर रहा होगा। चित्तौड़ के किले से ७ मील उत्तर में नगरी नाम का एक प्राचीन स्थान है, जो बेदले के चौहान सरदार की जागीर में पड़ता था। यह भारतवर्ष के प्राचीन नगरों में से एक है, जिसके अवशेष खंडहरों के रूप में दूर-दूर तक फैले हुए हैं, जहाँ कोट से घिरे हुए राजप्रासाद होने का अनुमान किया जाता है। यहाँ से कई जगहों पर बावड़ी, महलों के काट आदि के निर्माणार्थ पत्थर ले जाये गये। महाराणा रायमल की रानी श्रृंगारदेवी की बनवाई हुई घोसड़ी गाँव की बावड़ी भी नगरी से ही पत्थर लाकर बनाई गई है। नगरी का प्राचीन नाम मध्यमिका था। बली गाँव (अजमेर जिला में) से मिले हुए सन् ४४३ ई. पू. (वि. सं. ३८६) के शिलालेख में इस नाम का प्रमाण मिलता है। पतंजलि ने अपने महाभाष्य मध्यमिका पर युनानियों (मिनैंडर) के आक्रमण का उल्लेख किया है। वहाँ से मिलने वाले शिलालेखों में से तीन वि. सं. पूर्व की तीसरी शताब्दी के आसपास की लिपि में है। इनके लेखों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि वि. सं. पूर्व की तीसरी शताब्दी के आसपास विष्णु की पूजा होती थी तथा उनके मंदिर भी बनते थे। एक शिलालेख सर्वतात नामक किसी राजा द्वारा संपादित अश्वमेघ यज्ञ का उल्लेख करता है। एक अन्य शिलालेख वाजपेय यज्ञ के सम्पादन की चर्चा करता है।

नगरी से थोड़ी ही दूरी पर हाथियों का बाड़ा नाम का एक विस्तृत स्थान है, जिसकी चहारदीवारी बहुत लंबी व चौड़ी है। यह तीन-तीन मोटे पत्थरों को एक के ऊपर एक रखकर बनाई गई है। उस समय ऐसे विशाल पत्थरों को इस प्रकार व्यवस्थित करना एक कठिन कार्य जान पड़ता है। यहाँ से कुछ ही दूरी पर बड़े-बड़े पत्थरों से बनी हुई एक चतुरस्र मीनार है, जिसे लोग ऊमदीवट कहते हैं। यह स्पष्ट जान पड़ता है कि इस मीनार में इस्तेमाल किये गये पत्थर हाथियों का बाड़ा से ही तोड़कर लाये गये थे। इसके संबंध में यह कहा जाता है कि जब बादशाह अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई किया तब इस मीनार में रौशनी की जाती थी। नगरी के निकट तीन स्तूपों के चिंह भी मिलते हैं।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

वर्तमान में गाँव के भीतर माताजी के खुले स्थान में प्रतिमा के सामने एक सिंह की प्राचीन मूर्ति जमीन में कुछ गड़ी हुई है। पास में ही चार बैलों की मूर्तियोंवाला एक चौखूंटा बड़ा पत्थर रखा हुआ है। ये दोनों टुकड़े प्राचीन विशाल स्तम्भों का ऊपरी हिस्सा हो सकता है।

परिचय

चित्तौड़गढ़ शूरवीरों का शहर है जो पहाड़ी पर बने दुर्ग के लिए प्रसिद्ध है। चित्तौड़गढ़ की प्राचीनता का पता लगाना कठिन कार्य है, किन्तु माना जाता है कि महाभारत काल में महाबली भीम ने अमरत्व के रहस्यों को समझने के लिए इस स्थान का दौरा किया और एक पंडित को अपना गुरु बनाया, किन्तु समस्त प्रक्रिया को पूरी करने से पहले अधीर होकर वे अपना लक्ष्य नहीं पा सके और प्रचण्ड गुस्से में आकर उसने अपना पाँव जोर से जमीन पर मारा, जिससे वहाँ पानी का स्रोत फूट पड़ा, पानी के इस कुण्ड को भीम-ताल कहा जाता है; बाद में यह स्थान मौर्य अथवा मौर वंश के अधीन आ गया, इसमें भिन्न-भिन्न राय हैं कि यह मेवाड़ शासकों के अधीन कब आया, किन्तु राजधानी को उदयपुर ले जाने से पहले 1568 तक चित्तौड़गढ़ मेवाड़ की राजधानी रहा। यह माना जाता है गुलिया वंशी बप्पा रावल ने 8वीं शताब्दी के मध्य में अंतिम सोलंकी राजकुमारी से विवाह करने पर चित्तौढ़ को दहेज के एक भाग के रूप में प्राप्त किया था, बाद में उसके वंशजों ने मेवाड़ पर शासन किया जो 16वीं शताब्दी तक गुजरात से अजमेर तक फैल चुका था।

अजमेर से खण्डवा जाने वाली ट्रेन के द्वारा रास्ते के बीच स्थित चित्तौरगढ़ जंक्शन से करीब २ मील उत्तर-पूर्व की ओर एक अलग पहाड़ी पर भारत का गौरव राजपूताने का सुप्रसिद्ध चित्तौड़गढ़ का किला बना हुआ है। समुद्र तल से १३३८ फीट ऊँची भूमि पर स्थित ५०० फीट ऊँची एक विशाल (ह्वेल मछली) आकार में, पहाड़ी पर निर्मित्त यह दुर्ग लगभग ३ मील लम्बा और आधे मील तक चौड़ा है। पहाड़ी का घेरा करीब ८ मील का है तथा यह कुल ६०९ एकड़ भूमि पर बसा है।[1]

चित्तौड़गढ़, वह वीरभूमि है जिसने समूचे भारत के सम्मुख शौर्य, देशभक्ति एवम् बलिदान का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। यहाँ के असंख्य राजपूत वीरों ने अपने देश तथा धर्म की रक्षा के लिए असिधारारुपी तीर्थ में स्नान किया। वहीं राजपूत वीरांगनाओं ने कई अवसर पर अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने बाल-बच्चों सहित जौहर की अग्नि में प्रवेश कर आदर्श उपस्थित किये। इन स्वाभिमानी देशप्रेमी योद्धाओं से भरी पड़ी यह भूमि पूरे भारत वर्ष के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर रह गयी है। यहाँ का कण-कण हममें देशप्रेम की लहर पैदा करता है। यहाँ की हर एक इमारतें हमें एकता का संकेत देती हैं। महासती स्थल के पास ही गौमुख कुण्ड है। यहाँ एक चट्टान के बने गौमुख से प्राकृतिक भूमिगत जल निरन्तर एक झरने के रूप में शिवलिंग पर गिरती रहती है। प्रथम दालान के द्वार के सामने विष्णु की एक विशाल मूर्ति खड़ी है। कुण्ड की धार्मिक महत्ता है। लोग इसे पवित्र तीर्थ के रूप में मानते हैं। कुण्ड के निकट ही उत्तरी किनारे पर महाराणा रायमल के समय का बना एक छोटा सा पार्श्व जैन मंदिर है, जिसकी मूर्ति पर कन्नड़ लिपि में लेख है। यह संभवतः दक्षिण भारत से लाई गई होगी। कहा जाता है कि यहाँ से एक सुरंग कुम्भा के महलों तक जाती है। इस कुंड के समीप जाने के लिए सीढिया बनायीं गयी है तथा नीचे कुंड के किनारे मंदिर बने हुए है। ऐसा माना जाता है कि रानी पद्मिनी यहाँ स्नान के लिए अति थी। गौमुख कुण्ड से कुछ दूर दो ताल हाथी कुण्ड तथा खातण बावड़ी है। गौमुख कुण्ड के उत्तरी छोर पर समिध्देश्वर का भव्य प्राचीन मंदिर है, जिसके भीतरी और बाहरी भाग पर बहुत ही सुन्दर खुदाई का काम है। इसका निर्माण मालवा के प्रसिद्ध राजा भोज ने ११ वीं शताब्दी में करवाया था। इसे त्रिभुवन नारायण का शिवालय और भोज का मंदिर भी कहा जाता था। इसका उल्लेख वहाँ के शिलालेखों में मिलता है। सन् १४२८ (वि. सं. १४८५) में इसका जीर्णोद्धार महाराणा मोकल ने करवाया था, जिससे लोग इसे मोकलजी का मंदिर भी कहते हैं। मंदिर के निज मंदिर (गर्भगृह) नीचे के भाग में शिवलिंग है तथा पीछे की दीवार में शिव की विशाल आकार की त्रिमूर्ति बनी है। त्रिमूर्ति की भव्यता दर्शनीय है। मंदिर में दो शिलालेख हैं, पहला सन् ११५० ई. का है, जिसके अनुसार गुजरात के सोलंकी राजा कुमारपाल का अजमेर के चौहान राजा आणाजी को परास्त कर चित्तौड़ आना ज्ञात होता है तथा दूसरा शिलालेख जो सन् १४२८ का है महाराणा मोकल से सम्बद्ध है।

महाशिवरात्रि (Mahashivratri) के अवसर पर देशभर के मंदिर में शिवलिंग का दर्शन-पूजन करने के लिए भक्तों की कतार लगती है. महाशिवरात्रि का प्रसंग भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह का माना जाता है और विवाह की ही मूर्तियां दिखाई नहीं देती हैं. चित्तौड़गढ़ (Chittorgarh) में पौराणिक प्रसंग से जुड़ी ऐतिहासिक मूर्ति है जो शिव पार्वती के विवाह को दर्शाती है. इतिहासकार खुद इस मूर्ति को दुर्लभ मानते हैं. यहीं नहीं मेवाड़ के चित्तौड़गढ़ में शिव महिमा से जुड़ी कई मूर्तियां है. ऐसा इसलिए है क्योंकि यहां के राजा भगवान शिव (Lord Shiva) को ही अपनी गद्दी का राजा मानते थे और खुद को दीवान की उपाधि से संबोधित करवाते थे. इतिहासविद डॉ श्रीकृष्ण जुगनू ने बताया कि शिव पार्वती की एक साथ प्रतिमाएं काफी कम हैं. ये प्रतिमा दर्शाती कि यहां का चित्तौड़गढ़ दुर्ग मूर्तिकला का गहन और दर्शनीय केंद्र रहा है. वर्तमान में मीरा मंदिर के नाम से प्रसिद्ध परिसर के कुंभ-श्याम मंदिर की पश्चिम दिशा जमावदार स्तंभयोजना में शिव पार्वती के पणिग्रहण संस्कार को समर्पित प्रतिमा उत्कीर्ण है. इसमें एक और ब्रह्माजी विराजमान हैं, जो जलाभिषेक करते दिख रहे हैं. ऊपर विवाह के साक्षी कई देवी-देवता पुष्प वर्षा कर रहे हैं. उन्होंने

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

बताया कि ये प्रतिमा स्मरणीय और दुर्लभ है. मूर्तिशास्त्र में इसको कल्याण सुंदर प्रतिमा कहा गया है. इसमें देव सभा में कलश की चंवरी रचाकर शिव विवाह का प्रसंग उत्कीर्ण है. ऊपर ब्रहमाजी शिव प्रतिमा के विवाह को जलाहुति कर रहे हैं, इसे उनके फेरे कराना कह सकते हैं.

शिव तांडव का उल्लेख पहली बार चित्तौड़गढ़ की गंभीरी नदी के शंकर गट्टा पर मिले अभिलेख में भी है. • अवकासुर का वध, गंगाधर, शिव पार्वती पाणिग्रहण व किरात वेश में अर्जुन कृपा चित्र जैसी शिव लीलाओं की मूर्तियां अजंता ऐलोरा की तरह चित्तौड़ या उसके पास प्राचीन नगरी में मिली है. शिव के अर्द्धनारिश्वर की मूर्ति भी यहां है. विजयस्तंभ का एक पूरा माला शिवखंड है. उसमें शिव की अलग-अलग मूर्तियां है. विजयस्तंभ-गोमुख कुंड के पास समिद्वेवर मंदिर में भगवान शिव की त्रिमुखी प्राचीन विशाल प्रतिमा उनके तीन रूप उत्पति, पोषण व प्रलय का दर्शन है. चित्तौड़गढ़ किले का नीलकंठ महादेव मंदिर प्राचीन लेकिन अखंडित विशाल शिवलिंग के कारण प्रसिद्ध है. महादेव की पारिवारिक, सांसरिक लीलाओं के चित्र खासकर एकलिंग, मुखलिंग से लेकर शिव के विविध रूप, नदी पर बैठे शिव-पार्वती तक की मूर्तियां हैं. चित्तौड़गढ़ किले के शिल्प में शिव की जितनी मूर्तियां हैं, वो चित्तौड़गढ़ में ही बनी हैं. मेवाड़ के महाराणा यानी शासक इतने परम शिव उपार रहे कि एकलिंगनाथ के रूप में महादेव को ही मेवाड़ का राजा मानते हुए खुद को उनका दीवान मानते थे. दुर्ग के सबसे नीचे के भाग में चट्टान में गोमुख आकृतियों से अनवरत गिरती जलधारा बारहमास शिवलिंग का जलाभिषेक करती है.

राजपुताने का गौरव, शौर्यऔर बलिदान की स्थली - चित्तौड़। चारणों द्वारा गाई गई शौर्य गाथाओं में आज भी यहाँ की कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। चित्तौड़गढ़ का क़िला, 180 मीटर ऊँची पहाड़ी पर बना और 700 एकड़ में फैला सर्वोत्तम तथा सबसे बड़ा क़िला है। इस क़िले को तीन बार शक्तिशाली दुश्मनों का हमला सहना पड़ा। राजपूती वीरता, गौरव और जुनून को, यहाँ एक "साउण्ड एण्ड लाइट" शो द्वारा, रोजाना प्रतिध्वनित किया जाता है। पर्यटक इस शो को देखने और सुनने के लिए एकाग्रचित्त होकर बैठते हैं और चित्तौड़ की भावभीनी कहानी सुनकर दंग रह जाते हैं। सन् 1303 में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी ने, रानी पद्मिनी का अपहरण करने के लिए हमला किया। उसके बाद 1533 में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने इस किले पर हमला कर, तबाही मचाई। फिर चार दशक बाद 1568 में मुग़ल सम्राट अकबर ने इस पर हमला किया और कब्ज़ा कर लिया। सन् 1616 ई. में मुगल सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में यह क़िला राजपूतों को वापस सौंप दिया गया।

परम्परागत लाइट एवं साउंड शो में चित्तोड़गढ़ दुर्ग की स्थापना की कहानी, आक्रान्तो द्वारा दुर्ग पर आक्रमण, दुर्ग को लम्बे समय तक घेरने की कहानी, रानी पदमिनी के सूझबूझ, युद्ध कौशल की कहानी, गौरा बादल के वीरता और बलिदान की गाथा, रानी पद्मिनी द्वारा अन्य वीरांगनाओ के साथ किये गये जोहर आदि का बहुत रोचक चित्रण किया गया है।[2]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

विचार-विमर्श

विजय स्तम्भ

यह महाराण कुम्भा ने मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासकों को हराकर, अपनी विजय का जष्न मनाने और उसे चिरस्थापित करने के उपलक्ष्य में सन् 1440 ई. में बनवाना शुरू किया, जो कि 8 वर्षों में निर्मित हुआ। शिल्प कला का अद्भुत नमूना 'विजय स्तम्भ' , लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से बनाया गया, 9 मंज़िला स्तंभ है। इसमें हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियाँ अलंकृत की गई हैं। इसमें ऊपर जाने के लिए संकरी सीढ़ियों का रास्ता है और ऊपर जाकर बालकनियों से पूरे शहर का विहंगम दृष्य देखा जा सकता है।

2011 की जनगणना के अनुसार चित्तौड़गढ़ शहर की जनसंख्या कुल 1,16,409 थी, जिसमें से पुरुष 60,229 और महिला 56,180 थी। शहर का क्षेत्रफल 7 वर्ग कि॰मी॰ और उसकी समुद्रतल से ऊँचाई 408 मी॰ है। स्थानीय लोग मेवाड़ी, राजस्थानी और हिन्दी बोलते हैं।

- गर्मियों में अधिकतम 45.5 डिग्री से., न्यूनतम 25.5 डिग्री से.
- सर्दियों में अधिकतम 28.3 डिग्री से., न्यूनतम 5.5 डिग्री से.
- वेशभूषा - गर्मियों में हल्के सूती वस्त्र, सर्दियों में ऊनी वस्त्र
- सर्वश्रेष्ठ समय - अक्तूबर से मार्च

समिध्देश्वर महादेव के मंदिर से महाराणा कुम्भा के कीर्कित्तस्तम्भ के मध्य एक विस्तृत मैदानी हिस्सा है, जो चारों तरफ से दीवार से घिरा हुआ है। इसमें प्रवेश के लिए पूर्व तथा उत्तर में दो द्वार बने हैं, जिसे महा सती द्वार कहा जाता है। ये द्वार व कोट रावल समरसिंह ने बनवाया था।चित्तौड़ पर बहादुर शाह के आक्रमण के समय यही हाड़ी [[रानी कर्णावती] ने सम्मान व सतीत्व की रक्षा हेतु तेरह हजार वीरांगनाओं सहित विश्व प्रसिद्ध जौहर किया था। इस स्थान की खुदाई करने पर मिली राख की कई परतं इस करुण बलिदान की पुष्टि करती है। यहाँ दो बड़ी-बड़ी शिलाओं पर प्रशस्ति खुदवाकर उसके द्वार पर लगाई गई थी, जिसमें से एक अभी भी अस्तित्व में है। महाराणा कुम्भा ने मालवा के सुल्तान महमूद शाह खिलजी को सन् १४४० ई. (वि. सं. १४९७) में प्रथम बार परास्त कर उसकी यादगार में इष्टदेव विष्णु के निमित्त यह विजय स्तम्भ बनवाया था। इसकी प्रतिष्ठा सन् १४४८ ई. (वि॰सं॰ १५०५) में हुई। यह स्तम्भ वास्तुकला की दृष्टि से अपने आप मंजिल पर झरोखा होने से इसके भीतरी भाग में भी प्रकाश रहता है। इसमें विष्णु के विभिन्न रुपों जैसे जनार्दन, अनन्त आदि, उनके अवतारों तथा ब्रम्हा, शिव, भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं, अर्धनारीश्वर (आधा शरीर पार्वती तथा आधा शिव का), उमामहेश्वर, लक्ष्मीनारायण, ब्रम्हासावित्री, हरिहर (आधा शरीर विष्णु और आधा शिव का), हरिहर पितामह (ब्रम्हा, विष्णु तथा महेश तीनों एक ही मूर्ति में), ऋतु, आयुध (शस्त्र), दिक्पाल तथा रामायण तथा महाभारत के पात्रों की सैकड़ों

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

मूर्तियाँ खुदी हैं। प्रत्येक मूर्ति के ऊपर या नीचे उनका नाम भी खुदा हुआ है। इस प्रकार प्राचीन मूर्तियों के विभिन्न भंगिमाओं का विश्लेषण के लिए यह भवन एक अपूर्व साधन है। कुछ चित्रों में देश की भौगोलिक विचित्रताओं को भी उत्कीर्ण किया गया है। कीर्तिस्तम्भ के ऊपरी मंजिल से दुर्ग एवं निकटवर्ती क्षेत्रों का विहंगम दृश्य दिखता है। बिजली गिरने से एक बार इसके ऊपर की छत्री टूट गई थी, जिसकी महाराणा स्वरुप सिंह ने मरम्मन करायी। यह कीर्ति स्तम्भ से भिन्न है। कुंभ श्याम के मंदिर के प्रांगण में ही एक छोटा मंदिर है, जिसे कृष्ण दीवानी भांतिमति मीराबाई का मंदिर कहते हैं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार पहले यह मंदिर ही कुंभ श्याम का मंदिर था, लेकिन बाद में बड़े मंदिर में नई कुंभास्वामी की प्रतिमा स्थापित हो जाने के कारण उसे कुंभश्याम का मंदिर जानने लगे और यह मंदिर मीराँबाई का मंदिर के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस मंदिर के निज भाग में भांतिमति मीरा व उसके आराध्य मुरलीधर श्रीकृष्ण का सुंदर चित्र है। मंदिर के सामने ही एक छोटी-सी छतरी बनी है। यहाँ मीरा के गुरु स्वामी रैदास के चरणचिंह (पगलिये) अंकित हैं। ग्यारहवीं शताब्दी में बना यह भव्य जैन मंदिर अपनी उत्कृष्ट नक्काशी के काम के लिए जाना जाता है। इसमें २७ देवरियाँ बनी है। अतः इस मंदिर को सातबीस (७अ२० देवरी) कहा जाता है। मुख्य प्रतिमा तीर्थंकर भगवान पाशर्वनाथ की बड़ी प्रतिमा विराजमान हैं।

तेरहवीं शताब्दी में निर्मित इन महलों का जीर्णोद्धार महाराजा कुंभा द्वारा कराये जाने से इन महलों को महाराणा कुंभा का महल कहा जाता है। प्रवेश द्वार बड़ी पोल तथा त्रिपोलिया कहे जाते हैं। खण्डहरों के रूप में होते हुए भी ये महल राजपूत शैली की उत्कृष्ट स्थापत्य कला दर्शाते हैं। सूरज गोरवड़ा, जनाना महल, कँवलदा महल, दीवात-ए-आम तथा शिव मंदिर इस महल के कुछ उल्लेखनीय हिस्से हैं। मान्यता है कि इन्हीं महलों में एक तहखाना है, जिसमें एक सुरंग के माध्यम से गोमुख तक जाया जा सकता है। महारानी पद्मिनी ने हजारों वीरांगनाओं के साथ इसी रास्ते गौमुख कुंड में स्नान करने के बाद इन्हीं तहखानों में जौहर किया था, लेकिन यहाँ इस तरह के किसी सुरंग का प्रमाण नहीं मिला है।

इसी ऐतिहासिक महल में उदयपुर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह का जन्म हुआ था तथा यहीं स्वामीभक्त पन्नाधाय ने उदयसिंह की रक्षार्थ अपने लाडले पुत्र को बनवीर के हाथों कत्ल हो जाने दिया। मीराँबाई की कृष्ण भक्ति तथा विषपान की घटनाएँ भी इसी महल से संबद्ध है।

विजयस्तंभ, कीर्तिस्तंभ और समिद्वेश्वर मंदिर जैसे निर्माण के कारण चित्तौड़ दुर्ग विश्वभर के इंजीनियरों के लिए शोध का केंद्र माना जा सकता है। यहां के प्राचीन वास्तु ग्रंथ आईआईटी खड़गपुर, तकनीकी विश्वविद्यालय व नेशनल म्यूजियम भोपाल में रखे हुए हैं।[3]

कीर्ति स्तम्भ

यह विशाल स्तम्भ, जैन तीर्थंकर तथा महान शिक्षाविद् आदिनाथ जी को समर्पित है। एक धनी जैन व्यापारी जीजा बघेरवाल तथा उसके पुत्र पुण्य सिंह ने, 13वीं शताब्दी में बनवाया था। यह 24.5 मीटर ऊँचा हिन्दू स्थापत्य शैली में बना, विजय स्तम्भ से भी पुराना है। इस 6 मंज़िले स्तम्भ पर जैन तीर्थांकरों की तथा ऊपरी मंजिलों में सैंकड़ों लघु मूर्तियां शिल्पांकित की गईं हैं।

सातवीं से चौदहवीं शताब्दी तक जिन शिल्पियों ने दुर्ग और उसमें महल, स्मारक, मंदिर निर्माण में योगदान दिया। तब के महाराणाओं ने उन्हें पूरा सम्मान दिया। इनके नाम और चित्र तक स्थापत्य कला में जोड़े गए। विजयस्तंभ की दीवारों में जड़े हर

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

पत्थर के दोनों ओर कोई न कोई मूर्ति है। इनमें इसका शिल्पकार परिवार शामिल है। समिद्धेश्वर महादेव मंदिर में भी सन 1284 के सूत्रधार का चित्र सहित उल्लेख है। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू कहते हैं कि आपको पूरे दुर्ग पर विजयस्तंभ बनाने वाले महाराणा कुंभा सहित किसी भी महाराणा की मूर्ति नहीं मिलेगी लेकिन सूत्रधारों के नाम और कुछ जगह पर पर उनकी मूर्तियां मिल जाएंगी। जो इस बात का प्रमाण है कि यहां सूत्रधार खूब हुए और उन्हें पूरा सम्मान भी मिला। तब इंजीनियर यानी मुख्य शिल्पकार को सूत्रधार कहा जाता था।

वज्र लेप... सदियों पहले बना किला और विजयस्तंभ आज भी इसी तरह कैसे खड़ा है। जानकार बताते हैं कि तब मेवाड़ के कारीगरों ने निर्माण में ऐसा मसाला इजाद किया कि एक हजार साल तक उसका कोई सानी नहीं था। इसका नाम वज्र लेप था। मेवाड़ के 1000 शिल्पियों का कैलेंडर... मूलत: आकोला निवासी इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू एक कैलेंडर बनवा रहे हैं। इसमें उन 1000 सूत्रधारों के चित्र या नाम होंगे। जिन्होंने चित्तौड़ दुर्ग सहित मेवाड़ में अपनी शिल्प कला का लोहा मनवाया। वे अब तक साढ़े चार सौ सूत्रधारों के नाम चिन्हित कर चुके हैं। इसमें वह मेवाड़ी अथवा चित्तौड़ी गज मीटर चौबीस अंगुल को भी उल्लेखित करेंगे जो सिविल इंजीनियरिंग में आज तक मानक मानी गई है।

वे कहते हैं, मेवाड़ की प्राचीन राजधानी रहते हुए चित्तौड़ किले पर सूत्रधार कारीगरों की फौज थी। युद्ध के बाद रात में भी टूटी दीवारें बना दी जाती थीं। तब कारीगर को लेहमेन, ड्राफ्टर को डाक वेल और चिनाई करने वाले को चेजारा कहते थे।

विजयस्तंभ की पांचवीं मंजिल पर शिल्पी जेता व उसके पुत्रों की कृति। श्री गरुड़ की एक सुंदर मूर्ति चित्तौड़गढ़ किले के परिसर में पाई जाती है, जिसमें कुंभ श्याम और मीरा मंदिर हैं। कुछ समय पहले पुरातनता में निर्मित कुंभ श्याम मंदिर, 1448 ईस्वी में राणा कुंभा द्वारा काफी पुनर्निर्मित किया गया था। मंदिर मूल रूप से भगवान वराह को समर्पित था। मंदिर के सामने गरुड़ की यह उत्कृष्ट मूर्ति है, जो मंदिर के सामने स्थित है। गरुड़ को अपेक्षाकृत छोटे पंखों के साथ अपने आधे आदमी, आधे पक्षी के रूप में दिखाया गया है। सास-बहू मंदिर अपने उत्तम पत्थर की नक्काशी के लिए जाना जाता है, जो रामायण की घटनाओं से संबंधित हैं। राजस्थान में जगदीश मंदिर अपनी नक्काशीदार मूर्तियों के लिए भी जाना जाता है। ओसियां मंदिर अपनी नक्काशी के लिए भी जाना जाता है। राजस्थान के कई जैन मंदिरों में जटिल मूर्तियां हैं। शहर के गांधी चौक में चल रहे सीवरेज खुदाई कार्य के दौरान एक प्राचीन मूर्ति मिली। तहसीलदार शिव सिंह शेखावत ने बताया कि खुदाई के दौरान प्रतिमा मिलने पर पुलिस थाना कोतवाली से सूचना मिली थी। इस पर मौके पर पहुंचे और प्रतिमा को अपने कब्जे में लिया। प्रथम दृष्टया यह प्रतिमा गंधर्व की लग रही है। जिला कलक्टर श्री अरविन्द कुमार पोसवाल के निर्देशानुसार मूर्ति को चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित फतह प्रकाश संग्रहालय में रखवाया गया है, वहां पर विशेषज्ञ जांच कर इसके ऐतिहासिक महत्त्व के बारे में जानकारी देंगे। [4]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

सीवरेज खुदाई में मिली प्राचीन मूर्ति

परिणाम

चित्तौड़गढ़ का दुर्ग किले ने इतिहास के उतार-चढाव देखे हैं, यह इतिहास की सबसे खूनी लड़ाईयों का गवाह है, इसने तीन महान आख्यान और पराक्रम के कुछ सर्वाधिक वीरोचित कार्य देखे हैं, जो अभी भी स्थानीय गायकों द्वारा गाये जाते हैं। यह भवन राणा पूंजा के मेवाड़ के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान को याद रखने हेतु व शिक्षा के prachar- प्रसार हेतु निर्मित किया गया है। चत्रंग तालाब के समीप ही बीका खोह नामक बूर्ज है। सन् १५३७ ई॰ में गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह के आक्रमण के समय लबरी खाँ फिरंगी ने सुरंग बनाकर किले की ४५ हाथ लम्बी दीवार विस्फोट से उड़ा दी थी तथा दुर्ग रक्षा के लिए नियुक्त बून्दी के अर्जुन हाड़ा अपने ५०० वीर सैनिकों सहित वीरगति को प्राप्त हुए चत्रंग तालाब से थोड़ी दूर उत्तर की तरफ आगे बढ़ने पर दाहिनी ओर चहारदीवारी से घिरा हुआ एक थोड़ा-सा स्थान है, जिसे बादशाह की भाक्सी कहा जाता है। कहा जाता है कि इस इमारत में, जिसे महाराणा कुम्भा ने सन् १४३३ में बनवाया था, मालवा के सुल्तान महमूद को गिरफ्तार कर रखा था। भाक्सी से आगे कुछ अन्तर पर पश्चिम की तरफ बून्दी, रामपुरा तथा सलूम्बर की हवेलियों के खण्डहर दीख पड़ते हैं। इसी के पूर्व में पुराना चौगान है, जहाँ पहले सेना की कवायद हुआ करती थी। इसी को लोग घोड़े दौड़ाने का चौगान कहते है। विजय स्तंभ की तरह एक सात मंजिला स्तम्भ है जो भगेरवाल व्यापारी जीजाजी कथोड ने 12 वीं शताब्दी में बनवाया था, जैन धर्म का महिमामंडन करने के लिए बनाया गया था,इसका निर्माण विजय स्तम्भ से पहले करवाया गया था,यह एक प्राचीन जैन मंदिर के पास बनाया गया है,इसकी चौड़ाई आधार पर अधिक तथा सातवीं मंज़िल पर सबसे कम है। कीर्तिस्तम्भ के उत्तर में जटाशंकर नामक शिवालय है। इस मंदिर के बाहरी हिस्से तथा सभामंडप की छत पर उत्कीर्ण देवताओं तथा अन्य तरह की आकृतियाँ प्रशंसनीय है। अधिकतर मूर्तियाँ अखण्डित एवं सुरक्षित हैं। महाराणा कुम्भा ने सन् १४४९ ई. (वि. सं. १५०५) में विष्णु के बराह अवतार का यह भव्य मंदिर बनवाया। इस मंदिर का गर्भ प्रकोष्ठ, मण्डप व स्तम्भों की सुन्दर मूर्तियाँ दर्शनीय हैं। विष्णु के विभिन्न रुपों को दर्शाती हुई मूर्तियाँ, नागर शैली के बने गगनचुम्बी शिखर तथा समकालीन मेवाड़ी जीवन शैली को अंकित करती दृश्यावली, इस मंदिर की विशिष्टतायें हैं। मूल रूप से तो यहाँ, वराहावतार की ही मूर्ति स्थापित थी, लेकिन मुस्लिम आक्रमणों से मुर्ति खण्डित होने पर अब कुम्भास्वामी की मूर्ति प्रतिष्ठापित कर दी गयी।

कला की दृष्टि से सर्वाधिक प्राचीन देवालयों के भग्नावशेष हमें चित्तौड़ के उत्तर में नगरी नामक स्थान पर मिलते हैं। प्राप्त अवशेषों में वैष्णव, बौद्ध तथा जैन धर्म की तक्षण कला झलकती है। तीसरी सदी ईसा पूर्व से पांचवी शताब्दी तक स्थापत्य की विशेषताओं को बतलाने वाले उपकरणों में देवी-देवताओं, यक्ष-यक्षिणियों की कई मूर्तियां, बौद्ध, स्तूप, विशाल प्रस्तर खण्डों की चाहर दीवारी का एक बाड़ा, ३६ फुट और नीचे से १४ फुल चौड़ दीवर कहा जाने वाला "गरुड़ स्तम्भ' यहां भी देखा जा सकता है। १५६७ ई. में अकबर द्वारा चित्तौड़ आक्रमण के समय इस स्तम्भ का उपयोग सैनिक शिविर में प्रकाश करने के लिए किया गया था। गुप्तकाल के पश्चात् कालिका मन्दिर के रुप में विद्यमान चित्तौड़ का प्राचीन "सूर्य मन्दिर' इसी जिले में छोटी सादड़ी का भ्रमरमाता का मन्दिर कोटा में, बाड़ौली का शिव मन्दिर तथा इनमें लगी मूर्तियां तत्कालीन कलाकारों की तक्षण कला के बोध के साथ जन-जीवन की अभिक्रियाओं का संकेत भी प्रदान करती हैं। चित्तौड़ जिले में स्थित मेनाल, डूंगरपुर जिले में अमझेरा, उदयपुर में डबोक के देवालय अवशेषों की शिव, पार्वती, विष्णु, महावीर, भैरव तथा नर्तकियों का शिल्प इनके निर्माण काल के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का क्रमिक इतिहास बतलाता है।[5]

निष्कर्ष

चौगान के निकट ही एक झील के किनारे रावल रत्नसिंह की रानी पद्मिनी के महल बने हुए हैं। एक छोटा महल पानी के बीच में बना है, जो जनाना महल कहलाता है व किनारे के महल मरदाने महल कहलाते हैं। मरदाना महल में एक कमरे में एक विशाल दर्पण इस तरह से लगा है कि यहाँ से झील के मध्य बने जनाना महल की सीढ़ियों पर खड़े किसी भी व्यक्ति का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दर्पण में नजर आता है, परन्तु पीछे मुड़कर देखने पर सीढ़ी पर खड़े व्यक्ति को नहीं देखा जा सकता। पद्मिनी महल के तालाब के दक्षिणी किनारे पर एक पुराने महल के खण्डहर हैं, जो खातन रानी के महल कहलाते हैं। महाराणा क्षेत्र सिंह ने अपनी रुपवती उपपत्नी खातन रानी के लिए यह महल बनवाया था। इसी रानी से चाचा तथा मेरा नाम के दो पुत्र थे, जिसने सन् १४३३ में महाराणा मोकल की हत्या कर दी थी। पद्मिनी महल से दक्षिण-पूर्व में दो गुम्बदाकार इमारतें हैं, जिसे लोग गोरा और बादल के महल के रूप में जानते हैं। गोरा महारानी पद्मिनी का चाचा था तथा बादल चचेरा भाई था। रावल रत्नसिंह को अलाउद्दीन के खेमे से निकालने के बाद युद्ध में पाडन पोल के पास गोरा वीरगति को प्राप्त हो गये और बादल युद्ध में १२ वर्ष की अल्पायु में ही वीर गति को प्राप्त हो गये थे। देखने में ये इमारत इतने पुराने नहीं मालूम पड़ते। इनकी निर्माण शैली भी कुछ अलग है। उल्लेखित युग में निर्मित चित्तौड़, कुम्भलगढ़, रणथंभोर, गागरोन, अचलगढ़, गढ़ बिरली (अजमेर का तारागढ़) जालोर, जोधपुर आदि के दुर्ग-स्थापत्य कला में

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 7, July 2019

राजपूत स्थापत्य शैली के दर्शन होते हैं। सरक्षा प्रेरित शिल्पकला इन दुर्गों की विशेषता कही जा सकती है जिसका प्रभाव इनमें स्थित मन्दिर शिल्प-मूर्ति लक्षण एवं भवन निर्माण में आसानी से परिलक्षित है। तेरहवीं शताब्दी के पश्चात् स्थापत्य प्रतीक का अद्वितीय उदाहरण चित्तौड़ का "कीर्ति स्तम्भ' है, जिसमें उत्कीर्म मूर्तियां जहां हिन्दू धर्म का वृहत संग्रहालय कहा जा सकता है। वहां इसकी एक मंजिल पर खुदे फारसी-लेख से स्पष्ट होता है कि स्थापत्य में मुस्लिम लक्षण का प्रभाव पड़ना शुरु होने लगा था। सत्रहवीं शताब्दी के पश्चात् भी परम्परागत आधारों पर मन्दिर बनते रहे जिनमें मूर्ति शिल्प के अतिरिक्त भित्ति चित्रों की नई परम्परा ने प्रवेश किया जिसका अध्ययन राजस्थानी इतिहास के लिए सहयोगकर है।[5]

संदर्भ

1. "Lonely Planet Rajasthan, Delhi & Agra," Michael Benanav, Abigail Blasi, Lindsay Brown, Lonely Planet, 2017, ISBN 9781787012332
2. ↑ "Berlitz Pocket Guide Rajasthan," Insight Guides, Apa Publications (UK) Limited, 2018, ISBN 9781785731990
3. "राजस्थान का गौरव है चित्तौड़गढ़ का दुर्ग". दैनिक जागरण. मूल से 6 फ़रवरी 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 फ़रवरी 2017.
4. "Uttar Pradesh in Statistics," Kripa Shankar, APH Publishing, 1987, ISBN 9788170240716
5. "Political Process in Uttar Pradesh: Identity, Economic Reforms, and Governance Archived 2017-04-23 at the Wayback Machine," Sudha Pai (editor), Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, Pearson Education India, 2007, ISBN 9788131707975